पेरिस
फरवरी ५, २००७

सन्देश संख्या ११५

एक युवा फ्रेंच भक्त को पत्र

(अन्तर्द्वन्द्व के गलाघोटू पकड़ से छूटकर मुक्ति में प्रस्फुटन तथा
करुणा की शुद्धता में प्रवेश करने वाला भक्त)

अनन्त काल से मानव तुम्हारी स्थिति से गुजरता रहा है । इसीलिए कृष्ण (सर्वव्यापी चैतन्य) छः हजार वर्षों से भी अधिक काल से चिल्ला रहे हैं –

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति
प्रत्यवायो न विद्यते
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य
त्रायते महतो भयात्
(भगवद्गीता खख : ४०)

थोड़ी सी अद्वैत की समझदारी की ऊर्जा तथा थोड़ा–सा सरल योगाभ्यास शरीर को सुरक्षित रखता है तथा कई मानसिक प्रदूषणों से बचाता है । यह जानो कि सांख्य की इस समझदारी का तथा शुद्ध क्रियायोग का कोई भी विकल्प नहीं हो सकता है ।

प्रयत्नशैथिल्य की अवस्था में रहो । इसका अर्थ आलस्य नहीं है । यह केवल ''मैं–पना'' से मुक्ति को दर्शाता है । प्रयत्नशैथिल्य के लिए अंग्रेजी शब्द LET-GO बहुत सुन्दर है । इससे यदि तुम E-G-O (अर्थात् अहंकार) निकाल लेते हो तो तुम्हारे पास केवल L और T बच जाता है जो क्रमशः Love (प्रेम) और Truth (सत्य) को बताता है ।

धर्म और धैर्य एक है
जिसमें उत्तरों का दलदल नहीं
उद्धार का द्वार है
जिसमें उपद्रव का आपाधापी नहीं
ऊर्जा का आशीर्वाद है ।

धर्म धैर्य है । यह मुक्ति का द्वार है न कि प्रश्न–उत्तरों का दलदल । यह समझदारी की ऊर्जा का आनन्द और आशीर्वाद है न कि मन के शरारतों का षड्यन्त्र ।

शान्ति, संरक्षण और समृद्धि सदा तुम्हारे साथ हो । क्रियायोग–वंश परम्परा ने फ्रांस में अब तुम्हारे रूप में एक महान संरक्षक पा लिया है ।

।। जय धैर्य ।।